

9) वैश्वीकरण के प्रसार ने जनवाद और सिंहाजवाद को बढ़ावा दिया है, जो वैश्वीकरण की मूलभूत संरचना से जुड़ी है। (100 marks)

देवेन्द्र एक कॉल सेंटर में काम करता है। वह रोज शाम 8 बजे अपनी ऑफिस के लिए निकलता है। अपने दफ्तर में प्रवेश करने के साथ ही वह 'डेविड' बन जाता है। तब उसी भाषा में बात करता है जो उसका मातृभाषा अथवा समाज में बनी जाने वाली भाषा रही है। वह वैसे लोगों को सेवा प्रदान करता है जिससे वह उसे मिला नहीं, उसी छुट्टी भी विदेशी पैलेड से अछुदा होती है। वह अपने दो रात में काम करता है लेकिन उससे थोड़ा है। वह दिन का समय होता है। काम के बदले जो वेतन मिलता है उसे वह मनपसंद विदेशी कंपनी का सामान खरीदता है। साथ ही ही उसी कदन, जानकी से भी शिक्षा के साथ-साथ वह लोगों में रोजगार के अवसर मिल रहे हैं।

उपरोक्त उदाहरण वैश्वीकरण के कई पहलुओं से दिखाते हैं। सामान्यतः वैश्वीकरण को यह आरोप लगाया जाता है कि यह बहुत बड़े बहुआयामी स्वरूप है। यह श्रवधारण के रूप में वैश्वीकरण की बुनियादी बात है - प्रवाह। ये प्रवाह कई तरह के

हो सके हैं। विश्व में यह हिस्से से
दूसरे हिस्से में पूजा, वनदु, विचारों के
साथ-साथ व्यवसाय एवं आजीविका हेतु
जांगों का प्रवास वैश्विकरण के मुख्य
तत्व हैं। यहाँ सबसे अद्वितीय बात है
पारस्परिक जुड़ाव। यह पारस्परिक जुड़ाव
ही दुनिया को उत्थान विलेन बनाता है।

आर्थिक हिस्सों की
पूर्ति हेतु वैश्वीकरण का प्रसार हुआ।
वैश्वीकरण के प्रसार ने नवउद्धारवाद,
पश्चिमी संस्कृति व्यापार जैसी अवधारणा
को भी प्रसारित किया। इस प्रसार
से विभिन्न क्षेत्रों में कई प्रकार
के लाभ प्राप्त हुए, जैसे, ^{विदेशी} निवेश
से आर्थिक विकास भी हो तेज हुई,
आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिला, आधुनिक
पश्चिमी विचारों का प्रसार से हुआ।
मैक्रो जैसी कुरीतियाँ उन कई लाभ
ही पहिनाओं की सामाजिक हानि में
भी छुड़ा हुआ।

लेकिन, वैश्वीकरण के इस प्रसार
ने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं, जिनसे
विभिन्न देशों में जनवादी एवं संरक्षणवादी
विचारों से भी बढ़ावा दिया। इन
परिस्थितियों से विभिन्न विचारधारा वाले
लोगों ने निम्न-निम्न प्रश्न पूछे हैं।

प्राथमिकी राजनीति का ज्ञान
वाले लोगों का मानना है कि वैश्वीकरण
के बाद अत्यंत कम विकास ने आर्थिक
स्थिति को और भी चौड़ा कर दिया है।
अमीर और अमीर हो जा रहा है, गरीब
और गरीब। भारत में सबसे अमीर 1%
लोगों के पास देश की संपत्ति का 40%
हिस्सा है। वंचित वर्ग से और ज्यादा
वंचना का शिकार होना पड़ रहा है।

द्वितीयक राजनीति का ज्ञान
वाले लोगों का मानना है कि आर्थिक
एवं सांस्कृतिक-सामाजिक क्षेत्र में
वैश्वीकरण का बुरा प्रभाव पड़ रहा
है। पश्चिमी संस्कृति के अंतर्गत
से संबंधित राष्ट्रों की पारंपारिक
संस्कृति से घात हो रही है और

जागो अपने सहिषी दुर्लभ मूल्य तथा
गैर तरीकों से हाथ धोना पड़ रहा
है।

उद्धारवादी चिंतनों का मानना
है कि वैश्व युग से राज्य से
संप्रभुता से जुनीली मिल रही है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों, जिसकी निम्न
संपत्ति कई राज्यों के झरल बरेलु
उत्पाद से भी अधिक है, राज्यों से
आसानी से प्रभावित हो लेती है।

इन सब के अलावा, हम
वैश्व संध्याओं के सदैव प्रणाली से
देखते हैं जो पार है कि वैश्व
संध्याओं ^{द्वारा} न ^न उदयीमान वैश्व आर्थिक
व्यवस्था में विश्वस्तरीय देशों के हितों
का ध्यान दे नहीं जाया जाता है।
इन संध्याओं पर प्रायः पश्चिमी देशों
का प्रभाव देखा जाता है।

इस प्रभाव ने नव-

उद्धारवाद से बढावा दिया। लेकिन कुछ
चिंतन नवउद्धारवाद से नवसांप्रभुवाद
के रूप में देखते हैं। उनका मानना है

कि वटुसाधनेर रुपनियाँ ईदर इंडिया कंपनी
का ही परिपलित रूप हैं। शैक्षणिक सोशल
पिडिया रुपनियाँ एवं बुद्धि बुद्धिमत्ता व्यक्तित्व
स्वतंत्रता एवं निजता का हनन उदता
हुआ पाया जाता है।

आज के डिजिटल युग में
उता सब संसाधन के रूप में उभरा है।
एलेक्ट्रॉनिक आधारित उपकरणों द्वारा उता का
संचारण उपकरणों के माध्यम से बिना बिना
जाता है साथ ही उपकरणों द्वारा उता
का स्थानीयकरण नहीं किया जाता है। इसके
न केवल निजता का हनन हो जाता
है बल्कि लोभ-विषा और भी प्रभावित
किया जा सकता है।

उपरोक्त सभी कारणों से
वैश्वीकरण की प्रत्यक्ष अवधारणा 'वैश्वीकरण'
संज्ञा संज्ञा की पुनर्गति दी है।
इन्हीं पुनर्गतियों का परिणाम है
संस्कृत, साहित्य, देवनागरी, राज्य
द्वारा अप्रवासन नीति के कल्याण, इत्यादि।

इसका प्रभाव है-
और उसी वन जानकी पर भी पड़ेगा।
संसार संभव है कि जिस देश में अपनी

हैं लिए देवेंद्र राय कदता हैं उस कंपनी
 से अपने देश हैं लोगों से राजगार
 देने में प्रायश्चित्त देना मजबूती हो जाए,
 फिर देवेंद्र से दयाणीय कंपनी में उस
 कर्मचारी राय कदता हैं लिए मजबूत

होना पड़ जाए पादिजा। पदरूप अब कह
अपनी पत्रपत्रों की छुपनी छुट साधान नही
नही पादी साथ ही उसी कहन
जावनी है मेरी वही अपना अपना
है मेरी जैला पहल्ये मिलता था

प्रतीत होता है कि वे शरीर उग आये हयान
की ओर आकर्षित है लेकिन वास्तव में
हैसा नहीं है। इसे लीड पर वैश्वी उग
का विरोध नहीं हो रहा बल्कि इसके
काल पर ही विरोध हो रहा है
जिसे साम्राज्यवाद का रूप माना जाता है-
अथवा जिसके देश कोल पक्ष से प्रभावित
ही नहीं है।

27/3
Globulintia

(8)3 वैश्वीकरण ने विश्वस्तरीय देशों के लिए
परदान और आतिशाय दोनों के लिए बिना
है जहाँ यह विशाल है अपने प्रधान
रहता है वहाँ गई वैश्वीकरण का भी
सापना उठता है।

वैश्वीकरण एक बुनियादी अवधारणा है जिसके
मूल में है 'प्रवाह'। यह प्रवाह कई तरह
के हो सकते हैं, विश्व के एक हिस्से
से दूसरे हिस्से में पूंजी, वस्तु, विचारों
के साथ-साथ व्यवसाय एवं आजीविका
हो जाती का प्रवास वैश्वीकरण
के मुख्य तत्व हैं।

वैश्वीकरण के प्रसार
की पहल मुख्यतः विस्तृत देशों के
द्वारा किया गया। इनके इस प्रयास का
मूल कारण था अपने पूंजीवादी लक्ष्य
अर्थात् लाभ, का अधिकृत्य करना। इसके
लिए वह क्षेत्र के साथ-साथ
नए उपभोक्ता की खोज आवश्यक था।
इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु विस्तृत
देशों द्वारा उद्घारीकरण, वैश्वीकरण का
प्रसार विश्वस्तरीय देशों में किया गया।

वैश्वीकरण के प्रसार ने
विकासशील देशों को सहकार्य एवं
सहायता दोनों रूपों में प्रभावित किया।

वैश्वीकरण के कारण विकासशील
देशों की अर्थव्यवस्था में आधुनिक
परिवर्तन हुआ। भारत के संघर्ष में बात
करी ली, भारतीय अर्थव्यवस्था प्रगतिशील
व्यवस्था की ओर बढ़ने लगी। अर्थव्यवस्था
में उद्वेग तत्वों में दृष्टि देने लगी।
लाभोन्मुख राज को समाप्त किया गया तथा
सोवियत संघ की अवधारणा को अपना
लिया। इस परिवर्तन ने भारत के
आर्थिक विच्छेद दूर को तेज कर दिया,
राजगार के नए अवसर प्रदान किए।
भारत में विदेशी पूंजी का आगमन प्रारंभ
हुआ। बाजार और व्यक्ति प्रतिस्पर्धित
हुआ जिससे उपभोक्ताओं को प्रतिक्रिया
दा पर बढ़ते प्राप्त होने लगी। सरकार
ने केवल सामाजिक क्षेत्र को छोड़कर अन्य
क्षेत्रों को भी मिनी के तहत ले लिया
दिया।

आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन ने
सामाजिक क्षेत्र पर भी प्रभाव डाला। नौजवानों
के नए अवसर ने महिलाओं के लिए
भी नया अवसर प्रदान किया। कुछ
क्षेत्रों में तो नौजवानों के लिए महिलाओं
की ही प्राथमिकता दी जाती है। जैसे
हॉल गैलरी। आर्थिक विकास ने सामाजिक
जातिशीलता को कम कर दिया। अब
जाति आधारित वर्ग/व्यवस्था से बाहर
निकलकर अन्य व्यवस्था अपनाते हैं।
आर्थिक अवसर प्राप्त हुए।

वैश्वीकरण ने शहरीकरण
को भी बढ़ावा दिया। शहरीकरण ने सामाजिक
जातिशीलता को दूर रखा है। इस
कारण शहरी क्षेत्रों में जातिगत भेदभाव
रुद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है।

सामाजिक क्षेत्र के परिवर्तन
ने मानव विकास क्षेत्र पर भी प्रभाव डाला।
वैश्वीकरण ने पश्चिमी विचारों के प्रवाह
से जाति तंत्र को फलस्वरूप आधुनिकीकरण
में तेजी आई। कन्याश्रम और अंधविश्वास
को जगह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बढ़ावा दिया।

सामाजिक संरचना एवं
 अर्थिक का अंधाधुनक आधुनिकीकरण
 का पर्याय बन चुका है। आधुनिकीकरण
 का अर्थ, विचारों एवं व्यवहार में
 आधुनिक होने से नहीं बल्कि, पश्चिमीकरण
 ही गया है। यह अंधाधुनक, सर्वोप
 देश की मूल संरचना एवं परंपरागत
 अर्थिक विचारों एवं व्यवहारों से भी,
 हीन भाव से देखता है। लोग अपने
 ही संरचना से प्रति घेनता से भाव से
 भद्र जाते हैं। लोग जब तब 'योग' था
 तब तब ^{लोगों से} घेनता से भावना मरी हुई थी
 लेकिन जब यह विश्व से 'योग'
 बनकर आया तो इसमें, लोगों से, इसमें
 ओपता एवं व्यवहारिता नजर आने लगी।

उपरोक्त विवरण दर्शाता
 है कि जिस प्रकार वैश्वीकरण
 विश्वव्यापी देशों से लिए चुनौतियां
 लेकर आता है,
 मले ही वैश्वीकरण,
 अपने साथ संभावनाओं से साथ-साथ

पुनर्लिखां भी लाता है लेकिन
यं पुनर्लिखां संभावनाओं से उछी
उप है। अतः अपनी रुचियों से
वाक्यार्थ वे स्वीकृत्य संपूर्ण निश्चय से
सह ग्लोबल मिलज बनाने में
सहाय है।

Content को
और समझ को
की जानकारी है।
मौनिक एवं निष्कर्ष दोनों ही
GS के उत्तर के तहत है।
live feedback + report